



Original Article

‘मोरी रंग दे चुनरिया’ कहानी संग्रह में चित्रित नारी जीवन की समस्याएं

डॉ. हेमलता विजय काटे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण

Manuscript ID:

IJAAR-C130312

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 55 - 59

Submitted: 18 Jan.2026

Revised: 23 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. हेमलता विजय काटे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785344

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785344>



Creative Commons



सार:

समाज में कितना भी परिवर्तन क्यों न हो, नारी जीवन में परिवर्तन होगा ऐसी अपेक्षा करना उचित ही नहीं। कारण आज भी ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जहां नारी को प्रताड़ना का ही सामना करना पड़ता है। विधवा होने के बाद बंदिस्त रहकर ही उसे जीवन जीना पड़ता है। घर की बड़ी बेटी है तो अनेक जिम्मेदारियां संभालनी पड़ती है। ऐसे में अगर उम्र बीत जाती है, तो शादी की समस्या से सामना करना पड़ता है। बढ़ती उम्र के कारण दुहेज से शादी करनी पड़ती है। उसे क्या चाहिए? यह समाज कभी नहीं पुछता। बस उसे सुनना है, इसका एहसास उसे बार-बार दिया जाता। इस तरह यह जीवन उसके लिए यातनाओं का समंदर ही होता है, इसका एहसास यह कहानी संग्रह दिलाता है।

मुख्य शब्द: मोरी रंग दे चुनरियां, ‘सती’, मोरी रंग दे चुनरिया’, ‘यातना चक्र’, आखिरी सौगात’, स्वयंवर

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. हेमलता विजय काटे. (2026). ‘मोरी रंग दे चुनरिया’ कहानी संग्रह में चित्रित नारी जीवन की समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 55 - 59. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785344>

मूल शोध-लेख:

‘मोरी रंग दे चुनरिया’ मालती जोशी लिखित कहानी संग्रह है। जो सन 2011 में प्रकाशित हुआ है। जिसमें छः कहानियां संकलित हैं- ‘सती’, मोरी रंग दे चुनरिया’, ‘यातना चक्र’, आखिरी सौगात’, छोटी बेटी का भाग्य’, स्वयंवर’। यह

सारी कहानियां नारी जीवन की यातनाओं के साथ जुड़ी है। जिसमें नारी जीवन की विविध समस्याएँ, सामाजिक बंधन, पारिवारिक दायित्व तथा मानसिक यातनाएँ हैं। स्त्री होने के नाते लेखिका ने अत्यंत मार्मिक ढंग से स्त्री के अंतर्द्वंद्व और उसके संघर्षपूर्ण जीवन को चित्रित किया है। इस संदर्भ में डॉ. रमा



नवले का बहुत ही समर्पक वाक्य है, “रचनाकार जिस हवा में सांस लेता है, वह हवा तो उसे प्रभावित करती रहती है।”¹ शायद यही बात है की मालती जोशी जी के ‘मोरी रंग दे चुनरियां’ इस कहानी संग्रह में नारी जीवन की यातनाएं सहजता से उभरी है।

सती:

‘सती’ इस कहानी संग्रह की पहली कहानी है। नारी का अस्तित्व पुरुष के साथ ही जुड़ा हुआ है। उसके बैगरे उसका जीवन जैसे नरक बन जाता है, इसे इस कहानी के माध्यम से चित्रित किया है। पति के बाद नारी हर रोज सती ही जाती है। प्रस्तुत कहानी की नायिका कांता और नीलिमा दोनों भी है। कांता नीलिमा के पति गिरीश के चचेरे भाई अशोक की पत्नी है। जिसकी मृत्यु तीन साल पहले एक दुर्घटना में हुई है। नीलम अपने सास-ससुर के साथ गयी थी। इस घटना को तीन साल हो गये है। आज गिरीश बिमार है और अस्पताल में हैं। कांता उसे देखने आई है। उसके कपडों को देख नीलिमा पूछती है भाभी क्या आप इन्हीं कपडों में दफ्तर चली जाती हो? यही तो हो रहा था पर दफ्तर के कुछ औरतों की वजह से थोड़ा परिवर्तन हुआ है। परंतु कांता को अम्माजी के ताने सुनने पडते है। वह कहती है, “आदमी मर गया है पर इसका मन नहीं मरा।”² नीलम को लगा था कांता नौकरी करती है, तो घर में इसकी ही चलती होगी। पर ऐसा कुछ नहीं। उल्टा कांता तो उनके लिए बोझ ढोने के हथियार बन गयी थी। उसके लिए जीवन में खुशिया पाने का अधिकार ही नहीं रहा। बस अब वह पीस रही है। अपनी व्यथा वह नीलम को बताते हुये कहती है, “सच कहती हूं नीलम मैं परेशान हो गयी हूं मैं तो रात दिन मर-खप रही हूं कि बच्चों के जीवन में खुशियां बिखेर सकूं। उन्हें कभी पिता का अभाव न खलने दूं। पर एक भी त्यौहार ऐसा नहीं जाता जब कि उन्होंने बच्चों को न रुलाया हो।”³ इस तरह हर पल कांता को यातनाएं

भूगतनी पड रही है। पर प्रत्येक औरत अपनों बच्चों के कारण यह सारी यातनाएं सहन करती है। कांता कहती है, “ये बच्चे नहीं होते न निम्मो, तो मैं कब की कुएं में छलांग लगा देती। पर इनके कारण बंध गयी हूं बस।”⁴ पर उसका जलना जिंदगी भर का रहता है। कांता कहती है, “जो लोग औरत को जिंदा जला देते हैं, उनको को सरकार सजा देती है, पर जो लोग उसे जिंदगी भर जलाते रहते हैं, उनके खिलाफ कोई कानून क्यों नहीं बनता।”⁵ कांता की अवस्था देख गिरीश के जाने के बाद नीलम इस यातना से छुटकारा पाने के लिए अपने आप को गंगा में झोंक देती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में पति के जाने के बाद स्त्री को किस तरह समाज की ताने भरी यातनाएं सहनी पडती है, इसका चित्रण मिलता है।

मोरी रंग दे चुनरिया:

‘मोरी रंग दे चुनरिया’ दूसरी कहानी है। यह कहानी भी स्त्री की यातनाओं को चित्रित करती है। जिसमें शादी के वक्त लडकियों की होनेवाली धोखाधड़ी, जिसके चलते उसे परित्यक्ता बनकर जीवन जीना पडता है, जिस पति के साथ वह कभी नहीं रही ऐसी पति के मृत्यु पर विधवा के रूप में संघर्ष करना पडता। नारी के इसी यातनाओं को प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है। कहानी की नायिका जया है। मैं की वह सहेली है। दोनों एक साथ कॉलेज में नौकरी पे लगी थी। तब से दोनों में घनी दोस्ती हो गयी थी। मैं की बेटी मृणाल के साथ भी उसका अच्छा रिश्ता बन गया है। आज मृणाल की शादी तय हो गयी है, फिर भी जया नहीं आई। इसीलिए वह उसके घर जाती है। तब जया के घर में जैसे मातम छाया हुआ था। जया के मां ने उस पर अनेक पाबंदिया लगा दी थी। जया बताती है, “सच कह रही हूं दीदी। मुझे कमरे में कैद करके रख दिया है। कॉलेज नहीं जाने देते, टी.वी. नहीं देखने देते, रेडियो नहीं सुनने देते। पानी भी मुझे



मांगकर पीना पड़ता है। मुझे कोई घड़ा नहीं छूने देता।”⁶ मैं को इस बात का क्रोध आ रहा था कि “ये कैसा रिवाज है! जिस आदमी का इस घर से कोई संबंध नहीं रहा, जया कभी जिसकी देहरी नहीं चढ़ी, जिसके नाम से उसने मांग नहीं भरी, मंगलसूत्र नहीं पहना, बीस साल से जिसकी शक्ल भी नहीं देखी- उसका मातम आप क्यों मना रहे है? क्यों उस पर लाद रहे है?”⁷ जया अपने मायके में रहती थी कारण शादी के वक्त उन्हें फंसाया गया था। लड़के को मिरगी के दौर पड़ते थे। शादी के फेरे के वक्त उसे दौर पड़ते है। इस हादसे के बाद साल भर तक घर में ही मुंह छिपाकर बैठी थी। अब उसने अपनी जिंदगी शुरू की है। मैं उसकी दूसरी शादी करवाना चाहती थी। पर जया के पिताजी को यह मंजूर नहीं था। इसीलिये नौकरी करके वह अकेली ही जीवन जी रही थी। पर आगे पति के मृत्यु के बाद उसे नौकरी छोड़नी पड़ रही है। आगे उसके पति की पॉपर्टी उसे मिले इसलिए घरवाले उसे विधवा के लिबास में ही रहने के लिए कहते है। जया कहती है, “कॉलेज नहीं दीदी, मैं तो कोर्ट की बात कर रही हूं। वहां तो सफेद साड़ी पहनकर ही जाना पड़ता है। अगर असहाय निराश्रित विधवा का रूप नहीं धरूंगी तो जज साहब पर्सीजेंगे कैसे?”⁸ इस प्रकार कुछ गलती न होते हुए भी जया को इन यातनाओं से गुजरना पड़ा है।

यातना चक्र:

‘यातना चक्र’ यह तीसरी कहानी है। इस कहानी में बढती उम्र के कारण शादी की समस्या से जुड़ रही लड़की की कहानी है। कहानी की नायिका प्रेमा है। जो पिछले बारह सालों से कन्या महाविद्यालय में पढ़ा रही है। उसे दो रिश्ते आए थे। एक ने उसकी ज्यादा उम्र के कारण उसे नकार दिया था। वास्तव में वह खुद चालीस साल का था। उनके बड़े भाई ने कृपा पत्र भेजकर कहा था, “और तो सब ठीक है, पर लड़की जरा बड़ी

लगती है।”⁹ प्रेमा की इसी चक्कर दिन-ब-दिन बढती गयी। आज वह 34 वर्ष 3 महीने की है। इसी कारण बार-बार वह प्रदर्शन की वस्तु बन गयी थी। इतना ही नहीं तो बढती उम्र के कारण उस ई दुहाजू के भी रिश्ते आ रहे थे। उसके मां को तो और ही चिंता लगी रही थी। मां कहती थी, “अब इती उम्र पे क्या तुम्हारी कोख फले न फले।”¹⁰ अब प्रेमा भी इससे उब गयी हैं। उसकी भातीजियां नीलिमा, नंदिता उससे छोड़ी होकर भी उनकी शादियां तय हो गयी। प्रेमा कीसहन शक्ति अब समाप्त हो रही थी। लेखिका लिखति है, “उत्साह भी बेचारा कब तक साथ देगा! उम्र के सोलहें वसंत से यह सिलसिला शुरू हुआ है। शुरू-शुरू बड़ी उमंग थी। अपने सपनों के राजकुमार को देखने की उत्सुकता होती थी। इस तरह का प्रत्येक कार्यक्रम मुझे रोमांचित कर जाता था। पर जब दस-पांच नकार झेल लिए तो घबराहट होने लगी। फिर कुछ दिनों बाद यह रूटीन-सा हो गया और अब तो विरक्ति-सी होने लगी है। पहले-पहल निराशा होती थी, फिर मैं अपमानित-सा अनुभव करने लगी। और अब तो कुछ असर नहीं होता। मन जैसे चिकना घड़ा हो गया है।”¹¹ पर इस यातना चक्र से अब वह छुटकारा पाना चाहती है। आगे उसे दो बच्चों के बाप का रिश्ता आया था। वह अपने दोनों बच्चों को होने वाली मां को दिखाने के लेकर आए थे। जब वे जाने लगते है तब प्रेमा मन ही मन सोचती है, “मन हुआ कि दौड़कर जाऊं और ;पूछूं, बच्चो, तुमने मुझे पास किया कि नहीं? ए नन्हें फरिश्ते! इस यातना चक्र से तुम ही मुझे मुक्ति दिला सकते हो! तुम पर ही मेरी आशाएं टिकी हैं।”¹²

आखिरी सौगात:

‘आखिरी सौगात’ यह चौथी कहानी है। कहानी की नायिका सुमन है। जो परिवार के खातीर नौकरी कर रही है। उसने सोचा कि अम्मा उसके शादी के बारे में सोचेगी। पर बुआ से



उसे पता चलता है कि अम्मा उसकी नहीं तो उसके छोटे भाई सुनील की शादी तय कर रही है। अपने दोनों बेटियाँ निम्मी और सुमन के बारे में कुछ विचार नहीं करती। यह सून सुमन का सर दर्द करने लगता है। घर पहुँचति है तब अम्मा की सहेलियाँ घर में थी। एक सहेली कहती अब उसकी शादी कर दो। तब क्रोध में सुमन कहती है, “अब मैं लाउडस्पीकर पर मुनादी करने से तो रही कि मेरी शादी कर दो।”¹³ पर घरवाले चाहते हैं कि सुमन अब शादी न करे। परंतु सुमन अब जिद्द पर अड जाती है और एक बेटे के बाप से शादी करने के तैयार होती है। कारण अब वह इस घर में रहना नहीं चाहती यहां उसके भावनाओं का खयाल नहीं है। वह बुआ को कहती है, “जिंदगी बहुत खुशगवार कभी भी नहीं थी बुआ, पर फिर भी किसी तरह घिसट- घिसट चल रही थी। पर अब तो मेरा मन एकदम उचाट हो गया है। उस घर में पाँव देने को जी नहीं चाहता।”¹⁴ इसतरह शादी करके खाली हाथ सुमन उस घर से चली जाती है। कारण माँ के विचार है, “तेरी तो जमी-जमाई गृहस्थी है। घर में टोकने के लिए सास – ननद भी नहीं हैं। तू इन सब चीजों को ले जाकर क्या करेगी? इस बेटे होने के नाते हमेशा स्त्री के साथ दोगल व्यवहार ही होता है।

छोटी बेटे का भाग्य:

‘आखिरी सौगात’ यह पाँचवी कहानी है। कहानी की नायिका सुमन है। जिसके शादी को 12 साल हो गये हैं। फिर उसके मन आज तक यह बात नहीं गयी कि उसके परिवारवालों उसकी शादी एक दुहेजू से की थी। कारण बाबूजी के चले जाने बाद उसके शादी का विषय जैसे बंद हो गया था। और दो साल बीत जाते तो वह अनब्याही ही रह जाती। तब उसकी शादी एक दुहेजू से हो गयी थी। कारण भैया ने कहा था, “अब 27 साल की लडकी के लिए मैं कुंआरा लडका कहां से लाऊँ?”¹⁵ पति

ने उसका मन बदलने का बहुत प्रयास किया। वह कहता है, “सुमन! तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान की एक रेखा देखने के लिए मैंने क्या नहीं किया। पागलों की तरह दिन-रात खटता रहा, अपना खून-पसीना एक करता रहा।”¹⁶ फिर वे उसके अभावों को भर नहीं सके। कारण उसके लिए यह जीवन पीडादायी ही रहा है। वह अपनी अम्मा को कहती है, “ठीक ही तो कह रही हूँ अम्मा! तुम लोगों ने तो अपनी तरफ से मुझे धूरे पर ही फेंक”¹⁷ इस प्रकार लडकी बोझ समझकर माँ जल्दी उसे उतारना चाहती है।

स्वयंवर:

‘आखिरी सौगात’ यह छठी कहानी है। कहानी की नायिका प्रभा है। बाबू जी के जाने के बाद प्रभा के सपने राख हो गये थे। अठारह साल की उम्र से नौकरी करती आई है पिछले चोदह सालों से अपने घर परिवार संभाल रही है। अपने बाबू जी के सारे सपने पुरे किए हैं। भाई आनंद को डॉक्टर बनाया। बहन विभा को बी.ए.स्सी किया। अब वह शांत रहना चाहती है। पर अम्मा है कि उसकी शादी करना चाहती है। पर बडते उम्र के कारण उसे अच्छे रिश्ते नहीं आते इसीलिये भाई ही उसकी शादी होने नहीं देता और जो भी आते हैं छोटी भान विभा को ही मांगते हैं। “लोग भी ऐसे हैं, देखने आते उसे और मांगते हैं विभा को। जैसे न हुई, तरकारी हो गयी। छांट कर लेंगे।”¹⁸ इसके कारण विभा आगे चलकर प्रभा से रुठ रहने लगती है। घर में खामोशी का माहोल छा गया था। इससे प्रभा को वेदना हो रही है। “परेशान है प्रभा। क्या करे? कहां जाए? कितनी बार मन होता है कि कुछ खाकर सो रहे! पटरी पर लेट जाए या तालाब में छलांग लगा दे।”¹⁹ पर वह ऐसा भी नहीं कर सकती कारण बिन ब्याही लडकी का मरना भी निरापद नहीं होता। सौ तरह की बातें गढ़ लेते हैं लोग। इससे त्रस्त होकर अंत में प्रभा



गोपाल से शादी करने के बारे में सोचती है। जिनकी एक पांव रेल दुर्घटना में संज्ञा शून्य हो गया है।

निष्कर्ष:

‘मोरी रंग दे चुनरिया’ कहानी-संग्रह में मालती जोशी ने भारतीय समाज में स्त्री की बहुआयामी समस्याओं को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। इन कहानियों में विधवा-जीवन की यातना, विवाह-प्रक्रिया की विडंबनाएँ, आयु-समस्या, पारिवारिक उपेक्षा, आर्थिक शोषण और सामाजिक बंधनों का सशक्त चित्रण मिलता है। लेखिका ने यह सिद्ध किया है कि स्त्री केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि संवेदनशील, स्वाभिमानी और आत्मनिर्णय लेने वाली व्यक्तित्व भी है। यह संग्रह नारी जीवन के संघर्ष और उसकी मौन वेदना का सशक्त दस्तावेज है।

संदर्भ सूची:

1. डॉ. रमा नवले – मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी, पृ. 78
2. मालती जोशी – मोरी रंग दे चुनरिया (सती), पृ. 12
3. वही, पृ. 13

4. वही, पृ. 23
5. वही पृ. 14
6. मालती जोशी – मोरी रंग दे चुनरिया (मोरी रंग दे चुनरिया), पृ. 29
7. वही, पृ. 32
8. वही, पृ. 49
9. मालती जोशी – मोरी रंग दे चुनरिया (यातना चक्र), पृ. 56
10. वही, पृ. 59
11. वही, पृ. 60
12. वही, पृ. 70
13. मालती जोशी – मोरी रंग दे चुनरिया (आखिरी सौगात), पृ. 75
14. वही, पृ. 82
15. मालती जोशी – मोरी रंग दे चुनरिया (छोटी बेटा का भाग्य), पृ. 100
16. वही, पृ. 103
17. वही, पृ. 106
18. मालती जोशी – मोरी रंग दे चुनरिया (स्वयंवर), पृ. 107
19. वही, पृ. 118